प्रगति की चाह - कांची यूनिवर्सिटी की राह

हमारा प्राचीन भारत समस्त कलाओं का केंद्र तथा सारी विद्याओं का बसेरा था। प्राचीन भारतीय शिक्षा के इतिहास में कांचीपुरम्, नालंदा, तक्षशिला एवं वाराणसी- ये चारों क्षेत्र विद्या समुपार्जन हेतु अत्युत्तम विश्वविद्यालय माने गये। इन सभी में कांचीपुरम् का अपना अलग ही महत्त्व था। बाकी सभी विश्वविद्यालयों के विद्वानों के मन में चाहे किसी भी विषय को लेकर जो भी संदेह उत्पन्न होता, वे तुरंत उस संदेह का समाधान पाने कांचीपुरम् आया करते और अपनी शंका को तालपत्रों यानी- ताड़ के पत्तों पर लिखकर यहाँ विश्वविद्यालय के परिसर में एक सुनिश्चित स्थान पर रखे घड़ों के अंदर उन पत्तों को रख, प्रतीक्षा करते थे। तब यहाँ के विद्वान समय पाकर उन संदेहों का जवाब लिख, फिर उन घड़ों में रख देते थे। अतः इस प्रथा के अनुसार कांची विश्वविद्यालय को 'घटिकास्थानम्' के नाम से जाना जाता था।

ऐसे महिमान्वित क्षेत्र में शिक्षा के लिए पूर्णतः समर्पित एक विश्वविद्यालय की स्थापना करना 'कांची कामकोटि पीठम्' के परमाचार्य श्री श्री श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती स्वामी जी का संकल्प था। जब उनकी पावन आत्मा पूरे सौ वर्ष के अपने ऐहिक जीवन की समाप्ति करके परमात्मा में विलीन हो चली, उसी वर्ष उस महास्वामी के महान संकल्प को कामकोटि पीठाधीश श्री श्री श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामी जी के करकमलों के द्वारा साकार रूप दिया गया...महास्वामी के नाम पर एक महा विद्यालय की स्थापना की गयी।

आदि में 'न्यायविद्यालय' के रूप में मात्र संस्कृत की शिक्षा देनेवाला यह विश्वविद्यालय 'दिन दुगुना रात चौगुना' की भांति विकास प्राप्त करता गया तथा सन् 1993 ई. में 'मानित विश्वविद्यालय' (Deemed university) की प्रतिष्ठा भी हासिल कर ली। तब से लेकर इस विश्वविद्यालय का नाम 'श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय'(SCSVMV University) बबन गया। आज तक इस विश्व महाविद्यालय की प्रगति में अनेक मील के पत्थर देखने को मिलते हैं। इसमें छात्रों को वर्तमान युग के लिए आवश्यक जीविकोपार्जन संबंधी इंजीनियरिंग-तकनीकी शिक्षा के अनुशासनों के साथ-साथ मूल्यों से युक्त प्राचीन शास्त्र-सांस्कृतिक विरासत भी दी जाती है। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ प्राचीन शास्त्रों की शिक्षा दिलाना एकमात्र इसी विश्वविद्यालय की विशिष्टता है। एक तरह से इस विश्वविद्यालय को 'प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षाओं का बेजोड़ मिलाप' कहा जा सकता है।

पूज्यश्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती स्वामीजी चाहते थे कि छात्रों को दी जानेवाली शिक्षा मात्र धनोपार्जन संबंधी न होकर, प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट करनेवाली भी हो। उनकी इस आकांक्षा के अनुरूप ही इस विश्वविद्यालय में कदम रखनेवाले हर एक छात्र को संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति की शिक्षा अवश्य दी जाती है।

प्राचीन भारत में शिक्षा सभी छात्रों को प्रायः मुफ्त में मिलती थी। तब शिक्षा बिकनेवाली वस्तु कदापि नहीं थी। छात्र की रुचि के अनुसार गुरुकुल में उसे ज्ञान दिया जाता था। वर्तमानयुग में भी शिक्षा के क्षेत्र में उस प्राचीन विद्या-परंपरा का पुनरुद्धार करने की दृष्टि से 'एस.सी.एस.वी.एम.वी.' आगे बढ़ रहा है। इसीलिए यहाँ कैपिटेशन फीज़ या डोनेशन के नाम पर छात्र पर अनावश्यक बोझ नहीं डाला जाता बल्कि सिर्फ प्रबंधन के लिए आवश्यक धन लेते हुए छात्र को गुणात्मक शिक्षा दी जाती है। निकट भविष्य में पूर्णतः मुफ्तरूप से शिक्षा दिलाना 'एस.सी.एस.वी.एम.वी.' का सदाशय है।

इस विश्वविद्यालय में छात्रों का प्रवेश मात्र प्रतिभा के बलबूते पर होता है। कोई एण्ट्रेन्स परीक्षा लिखे बिना कोर्स के लिए अपेक्षित परीक्षा में विद्यार्थी के अंकों के आधार पर ही उसका चयन किया जाता है। 'एस.सी.एस.वी.एम.वी.' में बि.इ., बि.टेक., एम.बि.ए., एम.सि.ए., जैसे अनुशासनों के साथ-साथ आयुर्वेद, शिल्प एवं स्थापत्य कला, संस्कृत साहित्य, न्याय, व्याकरण, अद्वैत वेदान्त इत्यादि प्राचीन शास्त्रों की शिक्षा अनुभवी विद्वानों तथा आचार्यों के द्वारा दी जाती है। गरीब छात्रों के प्रोत्साहन के लिए छात्रवृत्तियाँ, खेलों में विशेष प्रदर्शन करनेवाले छात्रों को रियायतें, AIEEE, MAT, CAT जैसी राष्ट्र-स्तर की परीक्षाओं में छात्रों के प्रदर्शन को अहमियत देना इत्यादि इस विश्वविद्यालय की विशिष्टताएँ हैं। संस्कृत की शिक्षा प्रदान करनेवाले अत्युत्तम शैक्षिक संस्थानों में 'श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय' का देशभर में प्रमुख स्थान है। यहाँ संस्कृत की पढ़ाई करने आये हर छात्र को मुफ्त में छात्रावास एवं भोजन की सुविधा दी जायेगी तथा संस्कृत के प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति मिलेगी। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से एस.सी.एस.वी.एम.वी. के अच्छे संबंध हैं। कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों से इस विश्वविद्यालय के समझौते (M.O.U.) बने हुए हैं।

'श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय' में शोध-कार्य पर विशेष जोर दिया जाता है। यहाँ हर प्रकार के साइन्स विषयों एवं संस्कृत के विविध शास्त्रों में मौलिक (Fundamental) तथा प्रायोगिक (Applied) शोध-कार्य संपन्न हो रहे हैं। ताळपत्रों- यानी ताड़ के पत्तों के रूप में उपलब्ध अत्यंत प्राचीन ग्रंथों का संरक्षण इस विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी विशेषता है। कांची के परमाचार्य श्री श्री श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती स्वामी जी ने जब अपने जीवन-काल में संपूर्ण भारत का भ्रमण किया तब उन्होंने देश के कोने-कोने से अत्यंत प्राचीन ताळपत्रों को खोज निकाला। वे सभी अनमोल पाण्डुलिपियाँ हजारों की संख्या में विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में उपलब्ध हैं। उन पर रसायनों का लेप करके रखा जाता है और उन्हें डिजिटलाइजेशन की प्रक्रिया के द्वारा स्थाईरूप से भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का कार्य भी जोरों पर चल रहा है। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (NATIONAL MANUSCRIPTS MISSION) की सहायता से तमिलनाडु के अत्यंत मूल्यवान ताळपत्रों का अध्ययन एवं प्रकाशन कार्य भी संपन्न हो रहा है।

पुस्तकें किसी भी विश्वविद्यालय की धरोहर होती हैं। विश्वविद्यालय में अनेक विषयों पर कई हजारों पुस्तकें 'श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती अंतर्राष्ट्रीय ग्रंथालय' में उपलब्ध हैं। यह ग्रंथालय पूरे विश्वविद्यालय का सिरमौर कहा जा सकता है। आधुनिक अभियांत्रिकी एवं तकनीकी प्रतिभा का साकार रूप लगते इस भवन का निर्माण 'श्रीचक्राकृति' में हुआ। श्री चन्द्रशेखरेन्द्र स्वामी जी के मतानुसार प्रार्थना के बाद मिलनेवाली शिक्षा का प्रभाव छात्र पर दुगुना होता है! अतः सभी छात्र हर सुबह ग्रंथालय में संपन्न प्रार्थना-कार्यक्रम के पश्चात् ही कक्षाओं में जाकर पढ़ाई का आरंभ करते हैं।

छात्रों को दी जाने वाली 'प्लेसमेण्ट की सेवाएँ' विश्वविद्यालय की अन्यतम विशिष्टता है। देश-विदेशों से आये विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गज विद्वानों के भाषण छात्रों को निरंतर स्फूर्ति प्रदान करनेवाले होते हैं। कार्यक्षेत्र में उनके अनुभव छात्रों का मार्गदर्शन करने में सफल साबित हुए हैं। विश्वविद्यालय के कई छात्र देशभर के नामी कंपनियों तथा संस्थाओं में कार्यरत हैं तथा उनकी प्रतिभा व समर्पण-भावना से अभिभूत कई कंपनियाँ विश्वविद्यालय के छात्रों की माँग कर रही हैं। Dr. Reddy's, Wipro, Aditya Birla, ICICI, TATA, Ramco, Sree Ram इत्यादि कंपनियाँ इस वर्ष विश्वविद्यालय के छात्रों का चयन करनेवाली प्रमुख संस्थाएँ हैं। यहाँ के पूर्वछात्र विश्वविद्यालय से अपना नाता बरकरार रखते हैं और विविध क्षेत्रों के

हस्तियों को विश्वविद्यालय में लाने में योग देते हैं। इतना ही नहीं विश्वविद्यालय के पूर्वछात्रों का एक संगठन भी बना है जो गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ दिलाने में योगदान दे रहा है।

उच्च शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में शोध-कार्य करने हेतु सकल सुविधाओं से युक्त प्रयोगशालाएँ, चौबीसों घण्टे अंतरताने *(इण्टरनेट)* की सुविधा, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावासों का आयोजन, विश्वविद्यालय की निजी बसें, खेल-कूद तथा व्यायाम के लिए मैदान एवं *जिम*, विश्वविद्यालय के परिसर में ही चिकित्साकेंद्र, बैंक तथा *ए.टी.एम्.* इत्यादि अनेक सुविधाओं से युक्त 'श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय' निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है।

****